NEERAJ®

M.H.I. - 106

भारत में विभिन्न युगों के दौरान सामाजिक संरचना का विकास

(Evolution of Social Structures in India through the Ages)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Ved Prakash Sharma*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 380/-

Content

भारत में विभिन्न युगों के दौरान सामाजिक संरचना का विकास

(Evolution of Social Structures in India Through the Ages)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

Sample Question Paper–2 (Solved) 1

Sample Question Paper–3 (Solved) 1

S.No. | Chapterwise Reference Book | Page

खंड-1 : प्रस्तावना (INTRODUCTION)

1. प्राचीन समाज का पुनर्निर्माण : स्रोतों का विशेष संदर्भ 1
(Reconstructing Ancient Society with Special Reference to Sources)
2. शिकार-संग्रहण, प्रारंभिक कृषि समाज, पशुचारण 7
(Hunting-Gathering, Early Farming Society, Pastoralism)
3. हड़प्पा की सभ्यता और अन्य ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ 14
(Harappan Civilization and Other Chalcolithic Cultures)

खंड-2 : संक्रमणाधीन संस्कृतियाँ (CULTURES IN TRANSITION)

4. वैदिक साहित्य में समाज (Societies Represented in Vedic Literature) 21
5. लौह युगीन संस्कृतियाँ (Iron Age Cultures) 27
6. उत्तर भारत में सामाजिक-धार्मिक हलचल : बौद्ध धर्म और जैन धर्म 34
(Socio-Religious Ferment in North India: Buddhism and Jainism)
7. मध्य और प्रायद्वीपीय भारत में बौद्ध धर्म का अभ्युदय 43
(Emergence of Buddhist: Central and Peninsular India)

खंड-3 : प्रारंभिक ऐतिहासिक समाज : छठीं शताब्दी ई.पू. से चौथी शताब्दी ई. तक (EARLY HISTORIC SOCIETIES: 6TH CENTURY B.C. TO 4TH CENTURY A.D.)

8. शहरी वर्ग : व्यापारी और शिल्पकार, खेतिहर बस्तियों का विस्तार 50
(Urban Classes: Traders and Artisans, Extension of Agricultural Settlements)
9. चैत्य, विहार और उनका आदिवासी समूहों के साथ अंत:संपर्क 56
(Chaityas, Viharas and their Interaction with Tribal Groups)
10. प्रारंभिक तमिल समाज-क्षेत्र और उनकी संस्कृतियाँ और वीर पूजा की परम्परा 61
(Early Tamil Society: Regions and their Cultures and Cult of Hero Worship)
11. विवाह और पारिवारिक जीवन, अस्पृश्यता की धारणाएँ, वर्ण और जाति के बदलते स्वरूप 68
(Marriage and Family Life, Notions of Untouchability, Changing Patterns in Varna and Jati)

खंड-4 : प्रारंभिक मध्यकालीन समाज (EARLY MEDIEVAL SOCIETIES)

12. प्रारंभिक मध्यकालीन समाजों में परिवर्तन (Transition to Early Medieval Societies)..... 75
13. शहरों के पतन की समस्या : कृषि का विस्तार, भूमि अनुदान और मध्यस्थों का विकास..... 83
(The Problem of Urban Decline: Agrarian Expansion, Land Grants and Growth of Intermediaries)
14. वर्णों और जातियों का प्रसार और सुदृढ़ीकरण..... 89
(Proliferation and Consolidation of Castes and Jatis)
15. समाज में धर्म (Religion in Society)..... 95

खंड-5 : मध्यकालीन समाज-1 (MEDIEVAL SOCIETY-1)

16. ग्राम समुदाय (Village Community)..... 102
17. ग्रामीण समाज : उत्तर भारत (Rural Society: North India)..... 108
18. ग्रामीण समाज : प्रायद्वीपीय भारत (Rural Society: Peninsular India)..... 117

खंड-6 : मध्यकालीन समाज-2 (MEDIEVAL SOCIETY-2)

19. पश्चिम भारत में वंश और राज्यसंघ (Clans and Confederacies in Western India)..... 128
20. उत्तरी भारत में शहरी सामाजिक वर्ग (Urban Social Groups in North India)..... 134
21. प्रायद्वीपीय भारत में बदलता हुआ सामाजिक ढाँचा (Changing Social Structure in Peninsular India)..... 142
22. सामाजिक धार्मिक आंदोलन (Socio-Religious Movements)..... 152
23. अठारहवीं शताब्दी का समाज : संक्रमण काल (The Eighteenth Century Society in Transition)..... 163

खंड-7 : आधुनिक समाज (MODERN SOCIETY)

24. भारतीय सामाजिक संरचना के विषय में राष्ट्रवादियों और समाज सुधारकों की धारणाएँ..... 169
(Perception of the Indian Social Structure by the Nationalists and Social Reformers)
25. नए ऐतिहासिक संदर्भ में जातियों का अध्ययन..... 176
(Studying Castes in the New Historical Context)
26. ग्रामीण-शहरी गतिशीलता का स्वरूप : समुद्र पार प्रवसन..... 184
(Pattern of Rural-Urban Mobility: Overseas Migration)
27. शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक संरचना (Social Structure in the Urban and Rural Areas)..... 191

खंड-8 : उपनिवेशवाद के अंतर्गत सामाजिक मुद्दे
(SOCIAL QUESTIONS UNDER COLONIALISM)

28. औपनिवेशिक वन नीतियाँ और आपराधिक जनजातियाँ..... 198
(Colonial Forest Policies and Criminal Tribes)
29. उपनिवेशवाद में महिलाओं की स्थिति (Gender/Women Under Colonialism)..... 205
30. सामाजिक भेदभाव (Social Discrimination)..... 212
31. जन विरोध और सामाजिक संरचनाएँ (Popular Protests and Social Structures)..... 220
32. उपनिवेशवाद के अधीन जनजातियों का अध्ययन (Studying Tribes Under Colonialism)..... 228
33. औपनिवेशिक काल में उत्तर-पूर्वी भारत के सामाजिक स्वरूप..... 235
(Social Structures in the Northeast India during the Colonial Period)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

भारत में विभिन्न युगों के दौरान सामाजिक संरचना का विकास

M.H.I.-106

(Evolution of Social Structures in India through the Ages)

समय : 3 घण्टे] *[कुल अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से कोई पाँच प्रश्न करें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड-I

प्रश्न 1. प्राचीन भारतीय इतिहास को समझने हेतु कौन-से प्रमुख स्रोत हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-2, प्रश्न 1

प्रश्न 2. क्या हड़प्पा सभ्यता की सामाजिक संरचना इसकी शहरी पद्धति व लोकाचार को परिलक्षित करती थी? चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-14, 'शहरीकरण', पृष्ठ-16, प्रश्न 1, पृष्ठ-18, प्रश्न 3

प्रश्न 3. भारतीय इतिहास में 'प्रारंभिक मध्यकाल' का हम किस प्रकार विवेचन करते हैं? चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-75, 'परिचय', 'परिप्रेक्ष्य'

प्रश्न 4. प्रारंभिक मध्यकाल में व्यापारिक संघों अथवा श्रमिक निकायों की क्या भूमिका व कार्य थे?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-89, 'संदर्भ', 'सुदृढ़ीकरण का ढांचा'

प्रश्न 5. प्रारंभिक मध्यकालीन समाजों में मन्दिर की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-96, 'मंदिर और उसकी भूमिका'

खण्ड-II

प्रश्न 6. मध्यकालीन उत्तर भारत में ग्रामीण अभिजात्यों की प्रकृति पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-17, पृष्ठ-108, 'ग्रामीण अभिजात वर्ग'

प्रश्न 7. पश्चिम भारत में राजपूत कबीलों व संघों को बी.डी. चट्टोपाध्याय और नॉर्मन जिग्लर ने किस प्रकार देखा है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-19, पृष्ठ-130, प्रश्न 1, प्रश्न 2

प्रश्न 8. औपनिवेशिक भारत के संदर्भ में जाति पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-25, पृष्ठ-177, 'औपनिवेशिक शासन में जातियों की गणना'

प्रश्न 9. 19वीं शताब्दी के सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलनों के क्या प्रमुख आयाम थे? व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-31, पृष्ठ-223, प्रश्न 2, पृष्ठ-224, प्रश्न 3

प्रश्न 10. औपनिवेशिक शासन के दौरान उत्तर-पूर्वी भारत में सामाजिक संरचनाओं पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-33, पृष्ठ-237, प्रश्न 1, पृष्ठ-238, प्रश्न 2

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 1

(Solved)

भारत में विभिन्न युगों के दौरान सामाजिक संरचना का विकास

M.H.I.-106

(Evolution of Social Structures in India through the Ages)

समय : 3 घण्टे] *[कुल अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से कोई पाँच प्रश्न करें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. पुरातत्व-पठन पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-4, प्रश्न 3

प्रश्न 2. हड़प्पा की सामाजिक संरचना पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-16, प्रश्न 1

प्रश्न 3. सामाजिक-धार्मिक हलचल के उपरान्त उभरने वाली चिन्तन प्रवृत्तियाँ कौन-सी थीं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-37, प्रश्न 2

प्रश्न 4. संगम युग के प्रारंभिक ऐतिहासिक काल के अध्ययन के स्रोतों की प्रकृति की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-63, प्रश्न 1

प्रश्न 5. उस संदर्भ का विश्लेषण करें, जिसमें हम जातियों तथा वर्णों के सुदृढ़ीकरण पर बहस कर सकें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-91, प्रश्न 1

प्रश्न 6. उत्तर भारत में मध्यकाल के दौरान शहरी कुलीन वर्ग की स्थिति और अधिकारों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-20, पृष्ठ-137, प्रश्न 1

प्रश्न 7. प्रायद्वीपीय भारत में नौवीं से चौदहवीं शताब्दी तक भक्ति पर आधारित विभिन्न सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों के प्रादुर्भाव के ऐतिहासिक संदर्भ के बारे में चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-22, पृष्ठ-157, प्रश्न 1

प्रश्न 8. क्या उन्नीसवीं शताब्दी में किसानों के औद्योगिक पट्टियों में प्रवसन के लिए उनकी बढ़ती गरीबी ही जिम्मेदार थी?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-26, पृष्ठ-186, प्रश्न 2

प्रश्न 9. महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में लाने वाले आन्दोलनों के पहलुओं की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-29, पृष्ठ-207, प्रश्न 2

प्रश्न 10. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–

(क) खेतिहर बस्तियों का विस्तार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-50, 'खेतिहर बस्तियों का विस्तार'

(ख) 'जनजातीय' की समस्या

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-57, ''जनजातीय' की समस्या'

(ग) सामन्तवाद पर बहस

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-84, 'सामन्तवाद पर बहस'

(घ) पंच या पंच मुकद्दम

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-102, 'पंच या पंच मुकद्दम'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

भारत में विभिन्न युगों के दौरान सामाजिक संरचना का विकास
(Evolution of Social Structures in India through the Ages)

प्राचीन समाज का पुनर्निर्माण : स्रोतों का विशेष संदर्भ
(Reconstructing of Ancient Society with Special Reference to Sources)

1

परिचय

प्राचीन समाज के स्रोतों से अवगत कराना इस अध्याय का प्रमुख उद्देश्य है। सर्वप्रथम हमें प्राचीन समाज के स्रोतों के अर्थ को जानने की जरूरत है। इसके बाद इससे जुड़ी एक रूपरेखा तैयार की जाए। इस संदर्भ में व्याख्यात्मक क्षेत्र के एक प्रकार के इतिहास लेखन के बारे में जानना भी अत्यंत जरूरी है। एक बेहतर सोच को सहज एवं बोधगम्य बनाने हेतु इस अध्याय को प्रमुख रूप से पाँच भागों में विभाजित किया गया है। यह तथ्य भी विचार करने योग्य है कि प्राय: स्रोत स्वाभाविक रूप से व्याख्यात्मक से लगते हैं। इस संदर्भ में स्रोतों की समस्याओं पर भी ध्यान दिया गया है। इसके बाद प्राचीन समाज और उसके अर्थ का भी वर्णन किया गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

स्रोत

निम्नलिखित स्रोतों से प्राचीन समाज की सामाजिक संरचनाओं के पुनर्निर्माण में सहायता मिलती है।

पुरालेखविद्या

प्राचीन लेखों को पढ़ना और उनके आधार पर इतिहास का पुनर्गठन करना पुरालेखविद्या कहलाता है। पुरालेखविद्या के अंतर्गत निम्नलिखित बातें आती हैं–अभिलेख मुहरों, स्तूपों, चट्टानों और ताम्रपत्रों पर मिलते हैं। ये मन्दिर की दीवारों और ईंटों या मूर्तियों पर उत्कीर्ण होते थे। अशोक के शिलालेख समुद्रगुप्त तथा रुद्रदमन प्रथम के स्तम्भ धार्मिक व प्रशासनिक अभिलेख। भारत में पुरालेखविद्या का प्रारम्भ अशोक के लेखों के अध्ययन से प्रारम्भ हुआ। अशोक के अनेक लेख चट्टानों, स्तम्भों आदि पर लिखे हुए प्राप्त हुए हैं, परन्तु काफी समय तक उन लेखों का अध्ययन नहीं हो सका, क्योंकि वे लेख ब्राह्मी लिपि में लिखे हुए हैं।

मुद्राशास्त्र–मुद्राशास्त्र सिक्कों और अन्य मुद्रा इकाइयों का अध्ययन है और आमतौर पर दुर्लभ सिक्कों के मूल्यांकन और संग्रह से जुड़ा होता है, जिसमें सिक्के, टोकन, कागजी मुद्रा, पदक और संबंधित वस्तुएं शामिल हैं। मुद्राशास्त्र सिक्कों से हमें कालक्रम संबंधी जानकारी प्राप्त होती है। मुद्राशास्त्र से दूरस्थ राज्य विशेष के साथ संबंधों का भी पता चलता है। सातवाहन के प्राचीन विवरणों की पुष्टि जोगलथंबी के सिक्कों से होती है।

पुरातत्त्व–पुरातत्व भौतिक अवशेषों के माध्यम से प्राचीन और हाल के मानव अतीत का अध्ययन है। इसके अलावा मिट्टी के बर्तन, कंकाली पात्र, मुहरें तथा पुनर्निर्माण के विभिन्न अंग भी देखे गए थे। पुरातत्व मानव संस्कृति की व्यापक समझ की खोज में अतीत के भौतिक अवशेषों का विश्लेषण करता है। पुरातत्व से हमें लगभग 2700 ई.पू. के विभिन्न सभ्यताओं, जैसे–गुजरात के लोथल, सिंधु नदी की घाटी, कालीबंगा आदि की जानकारी मिलती है।

साहित्य–प्राचीन भारतीय साहित्य में हिन्दू धार्मिक ग्रंथों की प्रमुख भूमिका रही। वेद, उपनिषद् ब्राह्मण, अरण्यक, रामायण और महाभारत जैसे महाग्रंथ एवं पुराण प्राचीन भारत में रचे गए। अन्य प्राचीन ग्रंथों में वास्तुशास्त्र, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, दक्षिण का संगम साहित्य, पंचतंत्र, हितोपदेश आदि प्रमुख हैं।

व्याख्या

वास्तविकता यह है कि खुले दिमाग से चर्चा करने से ऐतिहासिक समस्याओं के समाधान में मदद मिलती है। इसके अलावा हम जानते हैं कि इतिहास लेखन कोई स्थिर प्रक्रिया नहीं है, बल्कि निश्चित रूप से एक सतत प्रक्रिया है। किसी विशेष युग के इतिहास को फिर से लिखते समय इतिहासकार निश्चित रूप से एक निश्चित पद्धति का उपयोग करते हैं और निष्कर्ष को एक सशक्त आधार देने का प्रयास करते हैं। जहां तक भारतीय इतिहास के आधुनिक लेखन का सवाल है, यह भारत के अतीत के औपनिवेशिक पुनर्निर्माण के अलावा और कुछ नहीं है। इसके अलावा औपनिवेशिक दृष्टिकोण से भारतीय इतिहास लेखन की दो प्रमुख विधाएँ हैं–1. उपयोगितावादी सिद्धांत तथा 2. प्राच्य स्वेच्छाचारिता। उपयोगितावादी दृष्टिकोण के अंतर्गत हम भारतीय समाज की परिवर्तनशील प्रकृति का अध्ययन करते हैं। जेम्स मिल पहले पश्चिमी विद्वान थे, जिन्होंने भारतीय समाज के नकारात्मक

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

पहलुओं को बल दिया। उन्होंने भारतीय इतिहास को हिंदू और मुस्लिम काल में विभाजित किया और भारतीय समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक पहलुओं को इन विभाजनों में शामिल करने का प्रयास किया। प्राच्य स्वेच्छाचारिता के तहत शासन की एक प्रणाली के अस्तित्व पर बल दिया जाता है। इस व्यवस्था का सबसे नकारात्मक तथ्य यह है कि गाँवों द्वारा उत्पादित अधिशेष को निरंकुश शासक और उसके सहयोगियों द्वारा हड़प लिया जाता है। 1960 और 70 के दशक के बीच भारतीय इतिहास केवल राजवंशों के बारे में जानकारी और गौरवशाली कार्यों के गायन से हटकर सामाजिक स्वरूपों के व्यापक अध्ययन की ओर मुड़ गया। इस अध्ययन में धार्मिक आंदोलनों, अर्थव्यवस्था के स्वरूप और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति पर ध्यान केंद्रित किया गया था। भारतीय सभ्यता के निर्माण में अनेक भारतीय संस्कृतियों की भूमिका की खोज की गई। प्राचीन भारतीय समाज के पुनर्निर्माण में वनवासियों, झूम खेती करने वालों, चरवाहों, किसानों, कारीगरों से लेकर व्यापारियों, अभिजात वर्ग और अनुष्ठान और विश्वास के विशेषज्ञों तक भारतीय संस्कृति के हर पहलू को जगह दी गई थी।

प्राचीन समाज मानव विज्ञानी पठन

प्राचीन समाज में देश के बाकी भागों में विभिन्न खानाबदोश जनजातियां फैली हुई थीं, जिनमें नरभक्षी, बौने, वक्षरहित रणचंडियों, लंबे दैत्य तथा सिरविहीन लोग आदि शामिल थे। रोमनों ने भारत से संबंधित अधिकांश जानकारी चौथी और छठी शताब्दी के बीच हासिल कर ली थी। यहां हमें चार व्यक्तियों के लेखन से भी अत्यधिक जानकारी मिलती है–करयांदा का स्काइलैक्स, जो एक यूनानी अधिकारी था, जिसे फारस के शासक डेरियस ने लगभग 515 ईसा पूर्व सिंधु घाटी का सर्वेक्षण करने के लिए भेजा था। इसके आधी शताब्दी बाद, हिरोडोटस ने भारत के इतिहास के बारे में लिखा, जो फारसी युद्धों को दर्शाता है। नाइडस का नीजिअस, जो कि हिरोडोटस का आलोचक था, के कार्य हमें भारत के प्राचीन समाज को समझने में मदद करते हैं। साथ ही मेगस्थनीज के लेखन से हमें बहुत मदद मिलती है, जो मौर्यों के दरबार में यूनानी राजदूत था और वह गंगा के मैदान में रहता था, ने भारतीय संस्थाओं और रीति-रिवाजों पर लगभग 300 ई.पू. में एक उल्लेखनीय स्थान खोजे। यह एक अजीब तरह का समाज था, जहां पौधों और जानवरों को पालतू बनाने के साथ ही मनुष्यों की पहली बस्तियाँ भी सामने आईं। इसलिए, पौधों और जानवरों को पालतू बनाने से जनजातीय दुनिया के उद्भव का मार्ग प्रशस्त हुआ। जनजातीय चरण ऐसी स्थिति का प्रतिनिधित्व करता था। उपभोग का उत्पादन, सामुदायिक स्वामित्व और शक्ति की अनुपस्थिति जैसे तीन तत्व इस चरण में जीवन की स्थितियों को चिह्नित करते थे। जनजातीय जगत में समान वंश के कई फायदे हैं। एक जनजाति के सदस्यों को रक्त द्वारा एक-दूसरे से संबंधित माना जाता है। एक व्यक्ति जन्म के आधार पर जनजातीय समाज का सदस्य बन जाता है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि पहले का समाज शिकारी-संग्रहकर्ता था। इस समाज में किसी स्थायी बंदोबस्त और सभ्य सामाजिक रिश्ते का अभाव था। सामाजिक जीवन के नये स्वरूप ने स्थिर गाँवों के विकास को प्रोत्साहित किया। लोगों के बीच सहयोग की गहरी भावना के परिणामस्वरूप नई आर्थिक व्यवस्था प्रकट हुई, जिसका लोगों के सामाजिक जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इस प्रकार, समाज शिकारी-संग्राहकों के चरण से स्थिर ग्रामीण जीवन की ओर स्थानांतरित हो गया।

पुरातत्व की प्रकृति

सशक्त आँकड़े और वैज्ञानिक परिशुद्धता का अभाव पुरातत्व के अवगुण माने गए हैं। इतिहासकार उत्खनन से प्राप्त सामग्रियों की विशेषताओं को देखकर पुरातात्विक आँकड़ों को समझने का प्रयास करते हैं। इसके अलावा इन सामग्रियों को स्व-व्याख्यात्मक प्रमाण के रूप में नहीं माना जा सकता है। यद्यपि वे सामग्री की खुदाई के तरीके में कुछ समूहों के अस्तित्व को दर्शाते हैं। इतिहासकार इन साक्ष्यों को एक निश्चित अर्थ देने के लिए अन्य स्रोतों, जैसे–सिक्के, मुहरें आदि का उपयोग करते हैं। इसलिए, पुरातत्व का महत्त्व काफी हद तक अन्य स्रोतों से प्राप्त बौद्धिक पुष्टि पर निर्भर करता है। इसके अलावा मिट्टी के बर्तन, जानवरों की हड्डियाँ, अनाज, दफन और कई अन्य चीजें भी इस उत्खनन के अविभाज्य उत्पाद हैं। इतिहासकार इन सामग्रियों का उस संदर्भ में विश्लेषण करने का प्रयास करते हैं, जिसमें वे पाए जाते हैं और उन्हें उचित अर्थ देते हैं। पुरातत्व के कार्य को देखकर यह कहा जा सकता है कि इतिहासकारों ने इसे एक विषय के रूप में स्वीकार कर लिया है और इसका उपयोग कर रहे हैं। इसके अलावा ज्ञानमीमांसा और इतिहासलेखन जैसी अध्ययन की शाखाओं ने एक विषय के रूप में पुरातत्व की वैधता को और अधिक मजबूत किया है।

पाठगत स्रोत

ऋग्वेद पाठगत स्रोतों में सबसे प्राचीन है। ऋग्वेद का संकलन लगभग 1500-1000 ईसा पूर्व हुआ था। ऋग्वेद एक भिन्न प्रकार का साहित्य है। यह अर्थशास्त्र या पुराणों से भी भिन्न है। यास्क के अनुसार पाणिनि से पहले 400 ईसा पूर्व हुए थे और उन्होंने ऋग्वेद के पाठ के साथ प्रारंभिक भाष्य का संकलन किया था। ऋग्वेद प्रारंभिक पाठगत संसाधनों का सबसे दुर्लभ रूप है। अत: ऋग्वेद को समझना आसान नहीं है। वैदिक भाषा जो कि संस्कृत है, ऋग्वेद की अभिव्यक्ति का माध्यम है। ऋग्वेद में भगवान की स्तुति में लगभग 1028 सूक्त संगृहीत हैं और वे विशेष उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। ऋग्वेद एक भिन्न प्रकार के समाज का प्रतिनिधित्व करता है। इस स्रोत से हमें पता चला कि यह प्रकृति में देहाती था। इसका मतलब है कि समाज में आदिवासी सामाजिक संरचना थी और ऐसे समाज में गाय पूजनीय थी। ऋग्वेद के अनुसार युद्ध के समय घर और रथ का बहुत महत्त्व होता था। ऋग्वेद में इंद्र और अग्नि जैसे देवताओं के अस्तित्व का भी उल्लेख है। इसके अलावा समाज में धन को प्रत्येक मनुष्य के पास मौजूद पशुओं की संख्या के आधार पर मापा जाता था।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारत के अतीत के पठन के विभिन्न स्रोतों की विवेचना कीजिए।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

उत्तर–भारत को अतीत के बारे में जानने के लिए विभिन्न स्रोतों में रखा गया है। भारत के प्रासंगिक स्रोतों का अध्ययन पुरालेख, मुद्राशास्त्र, पुरातत्व और साहित्यिक ग्रंथों के शीर्षकों के तहत किया जा सकता है। ये स्रोत अपने-अपने ढंग से उपयोगी हैं। इनमें इतिहासकारों ने पुरालेखीय स्रोतों को सर्वाधिक प्रामाणिक संसाधन स्वीकार किया है। शिलालेख ज्यादातर पत्थर की पट्टियों, धातु की प्लेटों, स्तंभों, गुफाओं की दीवार आदि पर पाए जाने वाले शिलालेख हैं। अशोक के शिलालेख, समुद्रगुप्त और रुद्रदमन प्रथम के स्तंभ धार्मिक और प्रशासनिक दृष्टिकोण से उल्लेखनीय हैं। इसके अलावा दिल्ली और बरहामपुर में पाए गए शिलालेख प्रकृति में द्विभाषी हैं और क्षेत्र में भाषाओं की स्थिति पर प्रकाश डालते हैं। हमारे पास पुडुकोट्टई में पाए गए संगीत नियमों से संबंधित शिलालेख और चित्तौड़ के टावर पर वास्तुकला पर ग्रंथ भी हैं, जिन्हें एक विशेष श्रेणी में रखा जा सकता है। इसके अलावा मंदसौर तांबे की प्लेटें, गोरखपुर जिले की सोहगौरा तांबे की प्लेट, महेंद्रवर्मन के एहोल शिलालेख, चोल के उत्तिरामेरूर शिलालेख संबंधित अवधि के व्यापार, करों और सिक्का प्रणाली की स्थिति के बारे में जानने के लिए सबसे अच्छे स्रोत हैं। सिक्कों के व्यापक प्रचलन के कारण राज्यों की सीमा निर्धारण में भी सहायता मिलती है। यह सत्य है कि ये शिलालेख अतीत में रहने वाले जीवन तथा समाज और अर्थव्यवस्था की प्रकृति के बारे में जानने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

पुरालेख के अलावा मुद्राशास्त्र भी समाज के पुनर्निर्माण के लिए विश्वसनीय स्रोत हैं, जो प्राचीन भारत में प्रचलित थे। देश के विभिन्न हिस्सों में सोने चाँदी और तांबे से बने विभिन्न प्रकार के सिक्के पाए जाते हैं। सिक्कों के माध्यम से साम्राज्य की आर्थिक स्थिति को बेहतर ढंग से व्यक्त किया जाता है। सिक्कों में मूल्यवान धातु की उच्च सामग्री की उपस्थिति निस्संदेह राज्य की समृद्धि को निर्धारित करती है। इसके अलावा इन सिक्कों पर कुछ विशेष चिह्न भी उभरे हुए हैं। कभी-कभी इन सिक्कों पर संबंधित काल का उल्लेख शासकों के रूप में भी अंकित होता है, इसलिए सिक्के कालानुक्रमिक मुद्दों को सुलझाने में बहुत मदद करते हैं। इसके अलावा सिक्कों के व्यापक प्रचलन से हम दूर देशों के साथ देशी शासकों के बीच संबंध का पता लगा सकते हैं। उदाहरण के लिए, रोमन सिक्कों की उपस्थिति इस तथ्य की ओर इशारा करती है कि भारत का महान रोमन साम्राज्य के साथ व्यापारिक संबंध था। अत: सिक्कों का मूल्य थोड़ा भी नहीं माना जा सकता।

अतीत के भौतिक अवशेषों में बताने के लिए कई कहानियाँ हैं। हम इन अवशेषों का अध्ययन इतिहास की एक विशेष शाखा के अंतर्गत करते हैं, जिसे पुरातत्व कहा जाता है। इतिहास की यह शाखा, जिसे विज्ञान माना जाता है, ऐतिहासिक इमारतों, स्मारकों और अन्य चीजों के अवशेषों पर ध्यान केंद्रित करती है, जिनसे उस काल के लोग परिचित थे। इसके अलावा भारत के प्राचीन समाज के पुनर्निर्माण के लिए बर्तन, मिट्टी के बर्तन, मुहरें, कंकाल अवशेष निर्विवाद मूल्य हैं। पुरातत्वविदों ने प्राचीन समाज से जुड़े कई तथ्य खोज निकाले हैं। भारत और विदेशों में खोदे गए स्मारकों में जो समानता हमें मिलती है, उसने निस्संदेह इन दोनों देशों के बीच एक मजबूत संबंध स्थापित किया है। अजंता और एलोरा की चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिर पुरातत्व के बेहतरीन नमूने हैं। इसकी दीवारों पर उकेरी गई पेंटिंग और मूर्तियां संबंधित काल में लोकप्रिय कलाकृतियों की उत्कृष्ट सुंदरता को व्यक्त करती हैं। इसके अलावा हम उनमें निहित ऐतिहासिक महत्त्व को भी नकार नहीं सकते।

भारत के प्राचीन साहित्य का कुछ विशेष महत्त्व है और यह प्राचीन समाज पर भरपूर प्रकाश डालता है। हमारा प्राचीन साहित्य, निस्संदेह, अनुभवों और पूजा के नियमों का भंडार है। वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, महाकाव्य (रामायण और महाभारत), ब्रह्मशास्त्र, पुराण हमारे महान प्राचीन साहित्य का हिस्सा हैं। इसके अतिरिक्त जैन एवं बौद्ध साहित्य से भी हमें प्राचीन समाज के अनेक तथ्य ज्ञात होते हैं। भाषा की दृष्टि से हमारा प्राचीन साहित्य अत्यंत उल्लेखनीय है, क्योंकि वह संस्कृत, पाली और प्राकृत की लोकप्रियता को बेहतर ढंग से व्यक्त करता है। इसके अलावा ये पाठगत स्रोत नृत्य, चित्रकला, संगीत, वास्तुकला और साम्राज्य के शासन के बारे में जानने के लिए हमारे विश्वसनीय स्रोत हैं। कौटिल्य द्वारा संकलित अर्थशास्त्र शासन कला पर एक ग्रंथ है और मौर्यों की प्रशासनिक व्यवस्था पर अच्छा प्रकाश डालता है। उसी प्रकार, संगम साहित्य को उस समाज के पुनर्निर्माण के लिए सबसे भरोसेमंद स्रोत माना जा सकता है, जिसकी स्थापना दक्षिण भारत के विशिष्ट काल में हुई थी। अत: इस तथ्य से कोई इनकार नहीं कर सकता कि भारत के पास प्राचीन भारत में प्रचलित समाज या सामाजिक जीवन से संबंधित संसाधनों की मजबूत आपूर्ति है।

प्रश्न 2. व्याख्या क्यों महत्त्वपूर्ण है? उपर्युक्त वातावरण के आलोक में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–किसी भी देश का इतिहास तेजी से बदलता है। किसी भी राष्ट्र के इतिहास का पुनर्लेखन निश्चित रूप से एक सतत प्रक्रिया है और ऐतिहासिक समस्याओं को हल करने के लिए नई तकनीकों की आवश्यकता होती है। इनके संबंध में खुले दिमाग से की गई व्याख्या से इतिहासकारों को कुछ निश्चित समाधान तक पहुँचने में काफी मदद मिलती है। इसके अलावा व्याख्या पर इतिहासकार न केवल नई पद्धति लागू करते हैं, बल्कि पहले से ज्ञात विभिन्न तथ्यों से ली गई कुछ नई अंतर्दृष्टि भी लागू करते हैं। विद्वानों के अनुसार इतिहासकारों की कला ऐतिहासिक मुद्दों के उनके बुद्धिमानीपूर्ण उपचार में निहित है, जिसे विषय का एक अनुशासन या पद्धति के रूप में माना जा सकता है। इसलिए, इतिहासकारों द्वारा अनुशासन का कड़ाई से पालन करना, ऐतिहासिक मुद्दों पर निर्णय करते समय व्याख्या का आधार हैं। इसके अलावा इतिहासकारों द्वारा लागू की गई किसी भी पद्धति की वैधता तब तक महत्त्वहीन है, जब तक कि उसे अनुशासन की कसौटी पर नहीं परखा जाता है। जब कार्यप्रणाली मूल रूप से भिन्न होती है, तो इतिहासकार सामान्य आधारों पर निर्भर रहना पसंद करते हैं और व्याख्या में अपनी अंतर्दृष्टि उजागर करते हैं। अत: ऐसी स्थिति में इतिहास के विद्यार्थियों को स्वयं ही कोई

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

निश्चित निष्कर्ष निकालते रहना चाहिए। लेकिन उन्हें साक्ष्यों के ठोस अध्ययन के आधार पर कुछ संभावनाएं प्रस्तुत करने को प्राथमिकता देनी चाहिए। मानवशास्त्रीय, पाठ्य और पुरातात्विक साक्ष्यों पर आधारित सच्ची व्याख्या निश्चित रूप से उन्हें प्राचीन भारत में समाज की प्रकृति के निर्माण में मदद करेगी।

प्राचीन भारत के इतिहास के विद्वानों द्वारा विभिन्न प्रकार से व्याख्या की गई है; बेशक, भारतीय इतिहास का प्रारंभिक आधुनिक लेखन ब्रिटिश दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति था। हालांकि औपनिवेशिक दृष्टिकोण से भारतीय इतिहास के लेखन को उपयोगितावादी और प्राच्यवादी सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। उपयोगितावादी सिद्धांत के तहत भारत को एक परिवर्तनहीन समाज के रूप में व्यक्त किया गया था, लेकिन यह सुझाव दिया गया था कि इस तरह के समाज को कानून की शक्ति के माध्यम से बदला जा सकता है। पश्चिमी विद्वानों में जेम्स मिल पहले थे, जिन्होंने भारतीय समाज के नकारात्मक पहलुओं पर जोर दिया, लेकिन भारतीय इतिहास का हिंदू और मुस्लिम काल में उनका काल-विभाजन निश्चित रूप से औपनिवेशिक विचारों के रंग को दर्शाता है। उनके द्वारा प्रतिपादित इस धार्मिक योजना के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन के प्रत्येक पहलू का दर्शन होता था। भारतीय इतिहास का अत्यंत दुखद चित्रण यह है कि भारतीय इतिहासकारों ने भी प्राचीन भारतीय समाज से संबंधित उनके विचारों को अपनी आलोचनात्मक बुद्धि को कष्ट दिए बिना स्वीकार कर लिया।

दूसरी ओर, व्याख्या का प्राच्यवादी मॉडल भारत के लिए कुछ अलग तरह के समाज की व्याख्या करता है। इस योजना के तहत केंद्र में सबसे शक्तिशाली शासक की कल्पना की जाती है और सबसे नीचे कमजोर उत्पादक गाँव को रखा जाता है। इसके अलावा उत्पादित वस्तुओं को निरंकुश शासकों द्वारा दरबार और उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में नियुक्त अपने अधिकारियों के माध्यम से हड़प लिया जाता था, इसलिए भारतीय समाज के बारे में पश्चिमी विद्वानों के ऐसे विचारों की नए सिरे से व्याख्या की आवश्यकता है।

पश्चिमी इतिहासकारों के विचारों पर आपत्ति करने के लिए नेशनलिस्ट स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल थॉट्स और मार्क्सवादी आगे आए और प्राचीन भारत में प्रचलित प्राचीन समाज के निर्माण पर नई रोशनी डाली। उनकी व्याख्या में भारत की बहुसंस्कृति को महत्त्व दिया गया और महान भारतीय संस्कृति का निर्माण करने वाली गतिशीलता का नए सिरे से मूल्यांकन किया गया। इसके अलावा भारतीय विद्वानों ने प्रासंगिक अवधियों के दौरान शासकों और उनके गौरवशाली कार्यों पर केंद्रित जानकारी के बजाय उन कारकों के व्यापक अध्ययन की ओर रुख किया, जिन्होंने भारतीय समाज के विकास में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। उनकी ताजा व्याख्या में वनवासियों, झूम कृषकों, चरवाहों और किसानों, कारीगरों से लेकर व्यापारियों, अभिजात वर्ग और अनुष्ठान विशेषज्ञों तक की विभिन्न संस्कृतियों को उनकी ऐतिहासिक व्याख्या के माध्यम से एक मार्ग मिला। अत: व्याख्या के इस व्यापक प्रयोग से प्राचीन भारतीय समाज की एक नई पहचान उभरकर सामने आई।

प्रश्न 3. पुरातत्व-पठन पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–पुरातत्व कठिन आँकड़ों और साक्ष्यों की वैज्ञानिक सटीकता से संबंधित नहीं है, लेकिन पुरातत्ववेत्ता इमारतों, स्मारकों और अन्य भौतिक चीजों के रूप में अतीत के भौतिक अवशेषों का अध्ययन करते हैं। बेशक, ये चीजें पहले लोगों द्वारा उपयोग की जाती थीं, लेकिन बाद में उन्होंने इन्हें त्याग दिया था। इसके अलावा इन चीजों का उस सामग्री के बाहर कोई अर्थ नहीं है, जिसमें वे पाए जाते हैं। हालांकि पुरातात्विक निष्कर्षों को खुदाई में प्राप्त सामग्रियों की विशेषताओं और उनसे मिलने वाले निष्कर्ष के संदर्भ में समझा जा सकता है। नि:संदेह, ये पुरातात्विक खोजों के अवगुण हैं।

कभी-कभी पुरातात्विक साक्ष्यों की मदद से किसी जातीयता के अस्तित्व का पता नहीं लगाया जा सकता है, लेकिन जिस तरह से उनके द्वारा उपयोग की गई सामग्री की खुदाई की गई है, उससे वे विभिन्न समूहों की उपस्थिति की पुष्टि करते हैं। पुरातत्वविद् निश्चित रूप से ऐसी परिस्थितियों में निष्कर्ष पर पहुँचने में खुद को एक कठिन स्थिति में पाते हैं। हालांकि वे पाठ्य, मुद्राशास्त्र जैसे अन्य स्रोतों से मदद लेते हैं और उन्हें सहयोगी साक्ष्य के रूप में उपयोग करते हैं। लेकिन कभी-कभी ये सहयोगी संसाधन पुरातत्वविदों के विचारों को कायम रखने में अप्रभावी साबित होते हैं। फिर, वे पूरी तरह से सामान्यीकरण की कला पर निर्भर रहते हैं और उन चीजों के साथ संबंध बनाने की कोशिश करते हैं, जो अब भी मौजूद हैं। इसके अलावा खुदाई की गई सामग्रियों की समृद्धि पुरातत्वविद् के सामने प्रश्नों की झड़ी लगा सकती है। ये प्रश्न कुछ महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक महत्त्व रखते हैं और पुरातात्विक दूरदर्शिता की आवश्यकता है।

उदाहरण के लिए, जब ताम्रपाषाणिक बस्तियों की खुदाई की जाती है, तो विभिन्न प्रकार की कलाकृतियाँ खोजी जाती हैं। इसके अलावा मिट्टी के बर्तन, जानवरों की हड्डियाँ, अनाज, दफन और कई अन्य चीजें, जो इस खुदाई के दौरान खोजी गईं। इन भौतिक निष्कर्षों का अर्थ निकालने के लिए, उन चीजों के प्रकाश में उनका मूल्यांकन करना आवश्यक है, जिनमें उन्हें बाहर निकाला गया है। इसलिए, स्ट्रैटिग्राफी का अध्ययन वास्तविक प्रकाश में किया जाना आवश्यक है और निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए पुरातात्विक निष्कर्षों के कई तथ्यों के बीच उचित संबंध भी सहयोगी होना चाहिए।

इनामगांव में ताम्रपाषाण स्थल पर की गई खुदाई से 1600 से 700 ईसा पूर्व की अवधि के बीच भौतिक संस्कृति में आए परिवर्तनों से संबंधित कई तथ्य सामने आए हैं। स्ट्रैटिग्राफी और भौतिक संस्कृति में अंतर के आधार पर इतिहासकारों ने इस अवधि को मालवा, प्रारंभिक जोरवे में वर्गीकृत किया है। हम निर्वाह पैटर्न, सामाजिक स्तरीकरण और बस्तियों की बदलती प्रकृति के बारे में बहुत कुछ सीखते हैं। इस उत्खनन के परिणामों की सहायता से भारत में प्रचलित सामाजिक संरचनाओं के बारे में कुछ स्पष्ट विचार भी प्रकट किए जा सकते हैं। हालांकि शिलालेखों, मुद्राशास्त्र और पाठगत संसाधनों के रूप में अन्य प्रकार के संसाधनों के अभाव में भिन्न राय आधुनिक विद्वानों के विचारों पर हावी हो

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com